

जानकी जयति

मैथिली गीत चन्द्रिका

व्यावहारिक भाग

श्रोत्रियवंशावतंस लब्धप्रतिष्ठ श्रीयुत हेमपति (विकल) शर्मात्मज

श्री श्यामानन्द शर्मा निर्मित

संशोधक

प० श्री मुकुन्द भा 'चनौर'

सर्वाधिकार सुरक्षित

सन १९३२ साल

प्रथम बार १०००

मूल्य = ॥

स्नेहार्पण

माननीय

युगन्त भागिनेय

बाबू चि० श्रीयुत उग्रधारी सिंह

तथा

चि० श्रीयुत कृष्णनन्दन सिंह साहब

क

शैशवोज्ज्वल कमल कोमल कर में

प्रथम तथा बालकालिक रचना क संग्रह

चन्द्रिका

सादर सानुनय सस्नेह

समर्पित

इति

स्नेहस्निग्ध

श्री श्यामानन्द भा

प्राक्कथन

भारतीय-भाषा मात्र में गीत-साहित्य क सौभाग्य मैथिली-भाषा क सर्वश्रेष्ठ छैक ई आव कोनों विज्ञव्यक्ति सँ अविदित नहि अछि । ओ दूएकटा प्राचीन मैथिलीगीतसंग्रह प्रकाशित भय दृष्टि-गोचरो भेल अछि से सभ रहलौ पर एहि संग्रह केँ प्रकाशित करवा क किछु अन्य प्रयोजन अछि ।

प्रथमतः साहित्यभारदार क अभिवृद्धि करव (अणुरपि विशेषोऽध्यवसायकरः) प्रस्तुत संग्रह क साहित्यिक महत्व सँ अतिरिक्त एक महत्व अछि—व्यावहारिक, ओ साम्प्रतिक मैथिली भाषा क निकटवर्तिता पूर्वक संग्रह सभक साहित्यिकमहत्व रहलौ पर व्यावहारिक ई क्रमवद्ध महत्ता नहि तदतिरिक्त ओकर भाषा किछु प्राचीन रहलासँ आधुनिक मैथिली सँ किछु दूर भय गेल छैक अतएव साधरणबोधगम्यो नहि ई सभ अनेक कारणों एहि संग्रह क उपादेयता सिद्ध होइछ । तखन गुणदोष क विषय में—से एक तंगुण-दोष-विवेचन में जाहि बहुमुखी विज्ञता ओ रचना क प्रति तटस्थता अपेक्षित छैक से सभ हमरा में एको नहि तखन ओहि हेतु चेष्टा क अनधिकार चेष्टा मात्र होएत तँ ओकर भार विज्ञ-वाचक लोकनिपर छोड़ि ओहि सँ बिरत हामय पड़ल । अन्त में मैथिली साहित्यमहारथी लोकनि सं निवेदन जे उदीयमान कवि केँ—उत्साहित करवा क दृष्टिये—सहानुभूतिपूर्वक त्रुटि प्रदर्शन ओ गुणकथन करथि, मञ्छिकादृष्टिये साहित्यपरिशोधन करवा क हेतु पर्याप्त सम्पत्ति एखन मैथिली केँ नहि छैक ।

आशा अछि मैथिली भाषा भाषी एहि संग्रह क समुचित आदर करत ।

श्री दुर्गाधर झा

शारदा शरणम्

मैथिली गीत चन्द्रिका

गोसाउनि

(१)

जय कमलासिनि ! करुणागारे !
जननि ! महेश्वरि ! त्रिभुवनसारे !
रचित-चतुर्भुज-रुचिर—विहारे !
कुशलं वितरतु भगवति ! तारे !
अभिनव-भूषण-चय—विन्यस्ते !
मञ्जु-विपञ्चो—पुस्तक—हस्ते !
श्यामानन्दविनोदिनि ! शस्ते !
शुभ्रतमे ! मम देवि ! नमस्ते !

दक्षिणकालिका

(२)

जय करुणाकरि दक्षिण देवी । शारद-शिशु-शशि-शेखर-सेवी
रिपुशिरहार भयानकभेसा । घोरवदन पुनि फूजल केशा
चारिभुजाअतिपीनउरोजे । सूकथल बहय असूकअतिओजे
नीरदनीलवरन तनुभासे । दन्तुरदन्त मधुरमुखहासे
दिशावसन लस शिवशवचासे । चहुदिश फेरव-रव-परकासे
तीनि नयन शवहुँइ लस काने । अरिकरनिकर ललित परिधाने
अभयवरद दक्षिणकर शोभी । लहलह जीह मधुरमधु लोभी
मञ्जुल खड्ग मुण्डकर वामे । सदावास समशान ललामे
विषमचरित अतिविकटनिनादे । सुखअभिमुखमुख परमप्रसादे
फुरितवदन वह शोणितधारा । करिय कृपादृग त्रिभुवनतारा
श्यामानन्द 'बालकवि' भाने । तात हेमपति सेवि सुजाने

तारा

(३)

जय भगवति ! तारे ! भगवति ! तारे !
चारिभुजा तिनिनयन ललामे । तरुनविरोचनमण्डलधामे
पदऊपर लस पद अभिरामे । रिपुशिर सरसीरुह कर वामे

जगन्नाथक जलमाँझ सरोजे । तसु लसलम्बउदर अति ओ
नवयौवनदुति हसित मनोजे । वामनतनु पुनि पीन उरो
बाघचरम कटिथल परिधाने । दक्षिणकर करपाल क
अगम अगाचर के कर भाने । घोरवदन करुना परध
विह्वल एक जटा शुचिभासे । चहुदिश ज्वलित चिता तत वा
मोपन दन्तुरदन्त विकासे । लहलह रसना मञ्जुल हा
मुद्रा पाँच रचल तनुशोभे । कुल-भूषन नाशित-जन-भ
नारिनि ! तुअ तनु दुरगम ध्याने । करिय न शरनागत अपम
श्यामानन्द 'बालकवि' भाने । तात हेमपति सेवि सुज

त्रिपुरसुन्दरी

(४)

जय जय त्रिपुरसुन्दरी देवी
अयुततरुनरवितेज भालतल शिशुशशिशोभी
अरुन वसनपरिधान हृदयजन सद्गतिलोभी
~~अयुत तनु~~ ^{अयुत तनु} ~~अयुत तनु~~ ^{अयुत तनु} चारि कर परमललामे
अयुतचक्र निवास निखिल जग में अभिरामे
शक्ति विराजित गात नयन तिनि सृष्टिनिदाने
श्यामानन्द सुजान हेमपति-पद-नतिमाने

भुवनेश्वरी

(५)

जय जय जय भुवनेश्वरि ! देवी !
 नीरद वदन चिकुरचयशोभित शुचिकिरीटशशिसेवी
 मृदु विकसित आनन उन्नतकुच तीनिनयन अभिरामे
 दक्षिणकर दुइ लस अकुंशवर पाशअभय दुइ वामे
 उदयसमय सरसिजवल्लभदुति अरुन मनोहरभासे
 श्यामानन्द हेमपति-पद-नत देवि ! तोहर एक आशे

भैरवी

(६)

अरुन वसन मृदुहसन तरुन अति रविसहस्रतनुभासे
 अनुपम चरित अगम गुनवरनन रिपुशिरहारविलासे
 लुधिरलिपितछबि पीनपयोधर शशिमनि मुकुटललाटे
 विकसित-सुन्दर-सरसिज-वासिनि ! वसन मनोहर पाटे
 तीनिनयन तासँ अतिदुतिमय मुखसरोज अभिरामे
 चारि भुजा पुस्तक जपमाला अभय वरद लस जामे
 भैरवि ! देवि ! करिय करुनादृग शरणागत निजदासे
 श्यामानन्द हेमपतिसेवक पूरिय अभिमत आशे

छिन्नमस्ता

(७)

कमल-कोष-दिनेश-मण्डल लसु प्रशस्ता हे
 जयति पुस्तक-युक्त-हस्ता छिन्नमस्ता हे
 कुसुम-राशि-विलास रचि नित सुभगबाला हे
 दहिनहाथ कृपान आशोर कुसुममाला हे
 निजकंठसँविगलितलुधिरकेरधारपायिनि हे
 मुखप्रसारित रसय रसना मुक्तिदायिनि हे
 नागवर उपवीत राजित मुक्तकेशिनि हे
 रचि सुरतविपरीत कामिनि मञ्जुवेशिनि हे
 पीनउन्नततमपयोधर भीमदेहा हे
 कोटिरविदुति योगिनीगन में सनेहा हे
 हेमपतिपदकमलरजकन शिरलगाओल हे
 सुकवि श्यामानन्द अनुपम सुयश पाओल हे

बगलामुखी

(८)

सुधासिन्धु विच मरकत कत मनि जड़ित रत्न केर वेदी
 तसु लस ललितसिंहासन ता विच देवीपद भयभेदी

पीत बसन भूषन ओ माला फूजल चिकुर ललामे
सुवरन पीतवरन के वरनय रिपुरसना कर वामे
भुजा युगल तसु दहिन गदा लय करथि बैरिहिय पीड़ा
मङ्गल करिय सदा बगलामुखि ! अति विचित्र तुअ क्रीड़ा
लोचनयुग भयमोचन शुचिमय जय करुनामयि देवी
श्यामानन्द हेमपति सेवक हेरिय निज पद सेवी

मातंगी

(६)

श्यामलतनुदुतिशेखरचाने । के करि शक तुअगुनलवगाने
तीनिनयन कर लस असिपाशे । अंकुश खेट ललित परकाशे
अष्टसिद्धिसेवित जगमाता । विनतिविनत सुर मुनि धाता
जननी चरन भगतगतिलोभी । मनिमण्डित सिंहासन शोभी
अनुगतजन दय सम्पति नाना । आनन विशद मनोहर बाना
सिद्धिरूप मातङ्गिनि देवी । करिय शुभाशिष निजपदसेवी
श्यामानन्द 'बालकवि' भाने । तात हेमपति सेवि सुजाने

लक्ष्मी

(१०)

माहे भवनिधि तारिनि ! कमले !!

चारिद्विरद घट अमिय पुरल लय सेचन कर शिर संकले
सुवरन वरन वराभय कर दुइ मञ्जुल मूरति विमले

दुइ कर कमल किरीट लसित शिर चारु चरित अतिविमले !
सरतिप्रथित मृदुहास रुचिर पट भूषित जय हरिमहिले
देहु अमय वरदान महेश्वरि ! निखिल भुवनतलप्रबले !
श्यामानन्द हेमपतिसेवक भान प्रमुख कविपटले

धूमावती

(११)

जय जय जय धूमावति ! माता !!

काक पीठ पर चरन युगल तत अवनत जगनिरमाता
परम मलिन पहिरनपट शोभित लोचन अधिक भयाने
अति विशाल रसनावलि भीषण उदर सूप परमाने
उपचित घाम आङ व्यापन कर भूख वेयाकुल देहा
अधिकसमुन्नत गात विनययुत फूजल चिकुर सनेहा
श्याम वदन अतिरुच्छ विकट छवि अखिलजगत भयहारी
श्यामानन्द हेमपति-पद गहि अरजु पदारथ चारी

दशावतार

(१२)

प्रलयमहाजल सँ छल त्रिभुवनखेदे
राखल ततथ तरनि भय वेदे

जय जय जय मीनस्वरूप ! जय कमलाधिपते !

आल के बाल बिहारी कल १७५५
 इन्क २५६ के देल बचाप
 जय जय बाप ! जय कमलाधिपते !
 मैथिली गीत चन्द्रिका

भूषित कयलधरनि सँ दाँत क भुङ्गे

कुसुमकली पर जनु थिर भुङ्गे

जय जय जय सूकररूप ! जय कमलाधिपते !

भारमगन धरती लखि करुनादीटे

ताहि उवारल दय निजपीटे

जय जय जय कमठस्वरूप ! जय कमलाधिपते !

खम्भमाँझ सँ लय अनुपम अवतारे

कयल हिरन्यकशिपु-संहारे

जय जय जय नरहरिरूप ! जय कमलाधिपते !

कयल लुधिरधारा सँ रंजितसंसारे

क्षत्रियवंशक कय संहारे

जय जय जय भृगुपतिरूप ! जय कमलाधिपते !

दशमुख प्रानविमुखकय राज्यमहाने

देल विभीषण केँ पुनि दाने

जय जय जय रघुवररूप ! जय कमलाधिपते !

धवलशरीरजलददुति शुचिपरिधाने

हल लय प्रकटित कृपानिधाने

जय जय जय हलधररूप ! जय कमलाधिपते !

क्रतु में घात कहय जे श्रुतिसमुदाये

निन्दा करथि तकर अकुलाये

जय जय जय बुद्धस्वरूप ! जय कमलाधिपते !

निसरोह में गहि अदयकृपाने

सकल-यवन-सन्ताने

जय जय जय कलिकस्वरूप ! जय कमलाधिपते !

श्यामानन्द सुखी कय दशावतारे

कवि हेमपति भवनिधिपारे

जय जय जय दशविधरूप ! जय कमलाधिपते !

बालगोपाल

(१३)

बालगोपालमुरति लखि के जन अग्रम अघाय

अङ्ग अङ्ग अन्तरङ्गवि निरखय नयन समाय

कुञ्चित केश जलददुति अथक धुरायलदेह

कटिधरिया वंशीधर व्रजयुवती सँ नेह

श्रुति मकराकृतकुरङ्गल मधुर मधुर तोतराय

रचिरचि चरित नचावधि चकित यशोदा माय

नातहेमपतिपद गहि पाव पदारथ चारि

श्यामानन्द 'बालकवि' मोहन मन अवधारि

दोसर

(१४)

भूषित वनमालं त्रिभुवनपालं वेणुधरं रामानुचरम्
हृतयुवतिविचारं दलितनिकारं मञ्जुतरं मोषणचतुरम्
सपदि सलीलं रचयति शीलं यस्य परं विस्मयनिकरम्
तमहं वालं नौमि गोपालं मोदकरं परितापहरम्
अतिकमनीयं हेमपतीयं शुचिरुचिरं पदकमलवरम्
श्रयतिमिलिन्दः श्यामानन्दः सुचिरतरं हरिमभयकरम्
यो युवतिनिचोलं कर्षति लोलं स्पृशति परं तासामधरम्
तमहं वालं नौमि गोपालं मोदकरं परितापहरम्

रामचंद्रक चैतावर

(१५)

सहजहिं मनदय रघुवर ! अरे मोहि रघुवर ! हे
चरन कमल में राखिय अरे मोहि राखिय हे
वनिय न कथमपि निरदय अरे मोहि निरदय हे
आवय छनछन लखि छबि अरे मोहि लखिछबि हे
भगति करय नहि जानिय अरे नहि जानिय हे
आश केवल करुना केर अरे करुना केर हे

अन हेमपतिपद गहि अरे हम पदगहि हे
श्यामानन्द सुकविवर अरे भन कविवर हे

श्री कृष्ण

(१६)

हरिहो तोहर मरम नहि जानी
उलथल सगर नगरभरि ताकय हिय न हेरय अगियानी
अचरम धरम नियत नहि कारन अजगुत पग निरवानी
कतमत मति कय जनम विषावय मरम न पावय प्रानी
श्यामानन्द हेमपतिसेवक बृथा बनय अभिमानी

महादेव

(१७)

दृग सँ बहय नीर मन ने रहय थीर
भोला कखन आव करुना करब हो
सेवा सकल हीन सुख में सदा लीन
यमयातना नाथ ! कोना सहब हो
मन में भरल काम दुख पावि परिनाम
तोरा बिना कानि ककरा कहब हो

अदरनदरन नाम भोला दयाधाम
तनिका बिछुड़ि और कनिका गहव हो
यदि ने दयाभाव भोला करी आव
तँ जानि की अन्त की भय रहव हो
आरतविधुरश्याम शिव आव सवयाम
तोरे चरन केर चाकर बनव हो

सोहर

(१८)

अवतर नन्दकिशोर, विभूषितकुरडल हे ललना
भेल नगर भरिसोर, मुदितव्रजमंडल हे
सुषमा लखि नरनारि, नयन फल पाओल हे ललना
वहय हरष केर वारि, मधुरपदगाओल हे
परमपुरुष लखि परिजन, सहज कृतार्थ हे ललना
श्यामानन्द मुदितमन, भन परमार्थ हे

छठिआर

(१९)

छठमादिन छठिआर, नगर हकारल हे ललना
होरिला विविध प्रकार, ननदो ओडारल हे
साठिगोसाउनि आवि, सौरि भय वैसथु हे ललना

जिन्थु लगन मनभावि, मनोरथ पूरथु हे
होरिला अरपल तोर, साठिगोसाउनि हे ललना
घनिक पुरह पुनि कोर, ननदो मनाउनि हे
आहुक मुखअनुमान, मनहु के कय शक हे ललना
श्यामानन्द सुजान, हेमपतिसेवक हे

नन्ना भैया

(२०)

नन्नाभैया नन्नाभैया नन्नाभैया भात । होरिला रहय निरुज सवगात
कोर कय होरिला धनी लजाय । वैसली लिचधर हरष मनाय
कोरो लय नेना वहराय । ताहिबजचितहि पुनि घर जाय
कोरो आडन छीटल गेल । हरष क वारि नयनभरिभेल
श्यामानन्द 'बालकवि' भान । तातहेमपतिसेवि सुजान

नामकरन

(२१)

नाम करन विधि आज । एकादश वासर हे ललना
शुभशुभ करय समाज । हरषि हिय घरघर हे
विधिवत नत कय माथ । पुजल पुनि ग्रहगन हे ललना
मधुलय दूचिक हाथ । कयल शुभ अङ्कन हे
बालक व्यास समान । जिवथु गिरिधररमि हे ललना
श्यामानन्द सुजान । हेमपतिपद नभि हे

कुमारि क गौरीपूजा

(२२)

लय सिन्दुर फल सुकुसुम वारि । मन क मनोरथ मनहिं निआरि
सुमुखि अरचु गिरिराजकुमारि । पाओल परम पदार्थ चारि
चानन अरपि वारि करपूर । माडल अभय माड भरिपूर
शैलदुलारि नमाविय शीश । देहु अपन सन वर जगदीश
करिय दयामयि ! उन्नित सोहाग । हरष क दिवस आज बड़ भाग
श्यामानन्द 'बालकवि' भान । तात हेमपति सेवि सुजान

होरिला क चुमाओन

(२३)

होरिला क करयि चुमाओन । जनु उपजल सुरमितसोन
पुरजनि मङ्गल गाओल । हिय अति हरष मनाओल
दूवि अक्षत लय आशिय । होरिला होथु जगत तिष
श्यामानन्द सुकविवर । हेमपतिचरन क अनुचर

कुमारि क महेशबानी

(२४)

मन अनुकूल कथा भेल हरष अधिकाएल
वर वरिआत तुलित भय नगर लग आएल

हृदयनि अधिक सोहाग सुमुखवर लाओल
दुख क मुकुत विशेष तकर फल पाओल
श्यामानन्द 'बालकवि' मुदित मन गाओल
हेमपतिभगतिपयोधि हृदय नहवाओल

परिछनि

(२५)

सुखनि चनली शुभ खन । परिछिय दुलहा बुधजन
का दीप कर में धय । डाला चान कलभ लय
सुख मज साजि सब । गायनि गाव सुपद नव
नखन दुनेम कुसुम माल । विधि करि गहल नवल डाल
कन मङ्गल घट भेल । परिछनि सुमति परिछि लेल
श्यामानन्द सुकवि भन । सेवि हेमपति गुरुजन

कन्या दान

(२६)

सुखद अवसर आज हे

शुभ खन परल हकार नगरभरि हरषित सकल समाज हे
गायनि गावि मनाओल मङ्गल बहुविधि बाजा बाज हे
सुमुखि कर सुमुख पानि पर उपजल दुहु मन लाज हे
नगर गन फूल फल जल दय पूरित शङ्ख विराज हे
शुभ शुभ कय यजमान यथाविधि पूरल मङ्गल काज हे
श्यामानन्द हेमपति पूजल पाओल सब समराज हे

सिन्दूर दान

(२७)

शुभ शुभ उपगत मङ्गल काल । पसरल सरस नेह नव जाल
सुपुरुष ! सिन्दूर करिय प्रदान । बनिय अयोध दुलारि परान
सुख दुख कय जीवन भेल एक । राखव धनि करगह कबिबेक
अनल सविध कय अङ्गीकार । पूरन करब शपथ अनुसार
श्यामानन्द 'बालकवि' भान । तात हेमपति सेवि सुजान

उपनयन

(२८)

आज जनौआ शुभ दिन रे हरषित नरनारी
गायत्री-मन्त्रा-भिय रे गुरु देलन्हि डारी
कुमर'कमल दुति पावन रे भेला ब्रह्मचारी
भीख माछि व्रत राखथु रे पावथु फल चारी
श्यामानन्द सुकविवर रे गाओल अवधारी
तात हेमपति-पदभरति रे वितरथु त्रिपुरारी

पसाहिनि

(२९)

करिय पसाहिनि सुमुखि सोहागे । उपगत आज सोहागिनि भागे
पुरुष जनम छल सुकृत विशेषे । पाओल परम मनोहर वेगे

सुख दुख कय जीवन भेल एक । राखव धनि करगह कबिबेक
अनल सविध कय अङ्गीकार । पूरन करब शपथ अनुसार
श्यामानन्द 'बालकवि' भान । तात हेमपति सेवि सुजान

अन्न परासन*

(३०)

सुख दुख कय जीवन भेल एक । राखव धनि करगह कबिबेक
अनल सविध कय अङ्गीकार । पूरन करब शपथ अनुसार
श्यामानन्द 'बालकवि' भान । तात हेमपति सेवि सुजान

देहरि छेकैक

(३१)

सुख दुख कय जीवन भेल एक । राखव धनि करगह कबिबेक
अनल सविध कय अङ्गीकार । पूरन करब शपथ अनुसार
श्यामानन्द 'बालकवि' भान । तात हेमपति सेवि सुजान

* = इ गीत क्रमबद्ध भय नहि छपिसकल पूर्वहि छपव उचित छल ।

दोसर

(३२)

विना इनाम देव नहि जाय । बहिन छेकल देहरि अगुआय
गाओल पुरजनि मङ्गल वाढ़ । सुमुख धनी सङ रहला ठाढ़
उचित लगन नहि वीतयदेल । अभिमत पुरि गृह उपगत भेल
श्यामानन्द 'बालकवि' भान । सेवि हेमपति—चरन महान

गौरीपूजा

(३३)

सुमुख गिरिजा चललि पूजय, जय मधुर-कल-गान गूजय
कुसुम-माल ललाम लय जल सङ्ग साजल रे
नव-नागरी-गन हरखि गावय, मन क अभिमत सकल पावय
मुरज भंभरि वेणु बहुविध बहुरि बाजल रे
लय फूल कुंकुम अगर केसरि, नील-नव-पट पहिरि वेसरि
पुजल गौरि—गनेश बाला हरष छाजल रे
हेमपति-पद-कमल—रज-कन, लेल श्यामानन्द अनुखन
वरष शत रहु सुमुखि शोभित नयन—काजल रे

फिल्ली सम्हारैक

(३४)

धनी सुमुख सङ वैसल कोवर, फिल्लालेल सम्हारि
सुमुख धनीपद धनी सुमुख-कर देलैन्हि सकुचि ओडारि

नव-नागरी-गन मण्डल हरषित छलि पुर—नारि
हेमपति सेवक अरज पदारथ चारि

मुन्नी छोरवैक

(३५)

अति कौतुक, विरचल कामिनि गोरि
मोहागिनि कर सँ, करथि जनौआ चोरि
हाथ सकत कय, दुलह विफल कयवेरि
युवतीगन, सुपुरुष—मुख—छवि हेरि
जनौआ विनु वर, भोजन करथु जमाय
करताल कहय सय, कोवरा क रीति सुनाय
श्यामानन्द 'बालकवि', गाओल हृदय विचारि
हेमपति—पद गहि, अरज पदारथ चारि

लगहरभरैक

(३६)

नव-कलस भरल जलरें, हिय हरखि सयानि
मिन्दुर चानन औंसल रे, कोवरा घर आनि
अमन वसन सं भाँपल रे, देल पल्लव डारि
कौतुक कय पुनि राखल रे, सिरहर नव—नारि
हेमपति-भगति-सरोवर रे, भय मज्जित वारि
श्यामानन्द कवीश्वर रे, गाओल अवधारि

योग

(३७)

सुपुरुष ! नेह लगाएव, सुख पाएव,
 उपगत होयत सोहाग हमर गुन गाएव ।
 नेह-लता यदि तोरव, मुख मोरव,
 अचरज योगिनिनाम योग-गुन छोरव ।
 सतत क्षमा हिय राखव, मृदु भाखव,
 फलित-पिरीति-लता क मधुर फल चाखव ।
 योगिनि अजगुत जानव डर मानव,
 नहिँ तँ देव लगाय प्रेम-मद-दानव ।
 हेमपति क पद-पल्लव, हम पूजव,
 श्यामानन्द सुजान भगति मति याचव ।

दोसर

(३८)

सुनिय सुमुख ! हम योगिनि रे, करि कामरुवास
 तिहुँतल छनपँह मोहिनि रे, कय योग-विकास
 सुपुरुष वश में आनव रे, दुलहिनि नव-नेह
 प्रीति सुदृढ़ गुन बान्हव रे, दामिनि-दुति-देह
 हेमपति—भगति—सरोवर रे, पुनिपुनि अवगाह
 श्यामानन्द कवीश्वर रे, नहि पाविय थाह

जुआ खेलाइक

(३९)

हुक बेबाब दुलारि, पहुक सड वैसल
 नव दु पासा ढारि, चालि सब सैतल
 नव खोर, धन, कांति, हरखि पहु राखल
 नव दिनहुँ सब भांति, सुमुखि हंसि भाखल
 नव नव—पद—नतिमान, सकल फल पाओल
 नव नव सुजान, मुदितमन गाओल

महुआ

(४०)

नव नव अतिहरषित रे, कर मंगल गाने
 नव नव दहिन विराजित रे, रचि विलमि-पयाने
 नव नव परसु नवल—दल रे, दम्पति कर भोगे
 नव नव कय कर फँकल रे, पहिलुक शुभ-योगे
 नव नव—भगति—सरोवर रे, कय सुखद सलाने
 नव नव कवीश्वर रे, आशिष दय भाने

घसकट्टी

(४१)

सुपुरुष ! हांसू कर धय । काटिय घास तुरग लय
 नव नव कान्ह चढाविय । मन सङ्कोच न लाविय

उचित इनाम सकल लेव । दहिन भेल छथि विधिदेव
प्रनमि हेमपति—गुरुजन । श्यामानन्द सरस भन

चतुर्थी

(४२)

भेल प्रभात ललितगर, मति सागर
आज चतुर्थी शुभ-विधि, करुगुन-निधि
समष्टि सेज धनि रीतल, घर नीपल
पालो पर पुनि वैसल, लयशुचि-जल
नागरिगन नहवाओल, सुख पाओल
श्यामानन्द सुकविभन, नमि गुरुजन

दसाउति

(४३)

आज दसाउति नवमा दीन । सखिगन सकल हरप में लोन
जानन काजल दीप हरीर । पान बियनि सम्पुट नवनोर
अयना सुरभित फूल कमाल । हाथ लेल अइहव शुभ-काल
सात सादिलय वर सुख-भेर । सिन्दुर-दान कयल दशवेर
श्यामानन्द 'बालकवि' भान । तात हेमपति सेवि सुजान

फूलतारी

(४४)

फूल-तारी-वाने । थिर विजुली घन भासे
फूल-तारी-वरनारी । फूल फुलल फूलवारी
फूल-तारी-वय । चुनल सुमुखि कौतुक कय
फूल-तारी-भय । गौरी पूजल मन दय
फूल-तारी-सुजाने । हेमपति क कय ध्यान

अभिसार

(४५)

अभिसार-रूप निधाने
अभिसार-गुण पर शशि-मण्डल हो कदाच उपमाने
अभिसार-जनु राहु पसारल रसना सिन्दुर-रहे
अभिसार-मुख-चान अचानक मन उपजय सन्देहे
अभिसार-वनाय शुकी जनु दाँतक दाडिम-दाने
अभिसार-कय मनोरथ पुनि पुनि होइछ दृढ़ अनुमाने
अभिसार-क काँति समटल पुनि देखि कलंक क रेखा
अभिसार-निधि में मज्जन कर तदधि न चान क लेखा
अभिसार-वर्ण-भगति-सुरसरिता अनुदिन कय असलाने
अभिसार-बालकवि सुन्दरि किछु छवि छाह सुजाने

उचिती

(୪୬)

सुपुरुष-कुल अवदात रे । हमर आज परभात रे
गहल धनिक कर आव रे । करथि न दोसर भाव रे
अवला कुमति-अगाध रे । होयत कत अपराध रे
तकर करथि नहि रोष रे । प्रभु-वर करुना-कोष रे
पुख धनिक अनुरोध रे । धनि अतिशय निरबोध रे
श्यामानन्द सुजान रे । हेमपति-पद-नतिमान रे

दोसर

(४७)

अबला सं कत दोष रे । सुबुध तदपि परितोष रे
करव पिरीति-निवाह रे । करगह पूरथि नाह रे
उपचित छल बड़भाग रे । धनि कें सुखद सोहाग रे
श्यामानन्द सुजान रे । हेमपति-पद-नतिमान रे

तेसर

(82)

सुपुरुष ! क्षमा करव सनमानि । हमर धिया सहजहि अगियानि
बुध-हिय गुन-गाहन-परिपाक । मधुकर कुसुम-कांठ नहि ताक

अभिय सरिस शाकहिं परितोष
तात हेमपति सेवि सुजान

बटगवनी

(୪୧)

नहि भय सक सखि हे नवयुवती केर वास
 वितैअलि देखिय जाकय यमुना-पास
 कहर कर माधव वजितहुँ उपजय लाज
 बगनोत करथि नहि निर्लज वसय समाज
 नहि कुपथ तेजथि हरि बलहुँ मचावथि रारि
 हृदय तेहने जनु निर्दय निठुर मुरारि
 हेमपति-चरण-सरोरुह-भगति-लोभ मन मांह
 भान गोपीगन ! हरि थिक त्रिभुवन-नाह

मल्लार

(५०)

ॐ शं ! हरिसं कहव बुभाय

नाकुल में पुनि भय उपजाओल राधा नोर वहाय
काजलमय लोचन-जल संभेलि कत यमुना लहराय

वाट-निकट भय वास बनाओल ब्रज-वनिता अगुआय
युवती-दरश असम्भव भयगेल नयन मुनल नहि जाय
श्यामानन्द हेमपति—सेवक हरिकें देहु मनाय

समदाओन

(५१)

सखि ! हे चिनती सुनथु जमाय
देल धिया अगियानि हिनक पद अनुचरि चरन लगाय
जे किछु अनट होइन्ह से सहिहथि डटथिन्ह जनु खिसिआय
कहव कतेक सुमति छथि अपनहि करथि न किछु अगुताय
श्यामानन्द दुखीमन गाओल हेमपति-भगति बढ़ाय

दोसर

(५२)

घर आङन सब अनचिन्ह होयतन्हि अनचिन्ह पुरनरनारि
जीवन-अवधि वितावय कोनविह जयती आन दुआरि
उदर हँ राखि यतनदय पोसल करम क हम अति छोट
पान-पियारि कोना से होयती जिवतहि आँखि क ओट
मुख लखि ककर धीर भय रहती के बुझतैन्हि अनुरोध

आन कोना सहिसकर्ता अमरुख परम अबोध
कोना कोना बड़ाओल ककरो कुलय फलय नव—वाटी
श्यामानन्द हेमपति—सेवक जगत क यैह परिपाटी

चिनी परसैक

(५३)

कुल-आरि नवनागरि रति-छवि पहिरि पीत-पट-चासे
कोना सुखि सकुचि कय परसल पुरल सकल मन-आशे
कुल-आन सोजन कयल वियनि लय करथि पवन-परचारे
कोना दारि सब खरिका पुनि कर देथि कुल क अनुसारे
कोना पानि आनि कय देलैन्हि पाओल धनि बड़भागे
श्यामानन्द हेमपति—सेवक धन धन धनिक सोहागे

नगनीपी

(५४)

आन कुल-घर हिय अनुरागे । दीप मिभाय हटाओल नागे
सुकुचि उपगत बड़ भागे । सकुचि नाग-घर नीपय लागे
कोना निपव देव उपरागे । ननदो कहथि सराहि सोहागे
श्यामानन्द हृदय रहु रागे । हेमपति क पद-कमल-परागे

ओरभोर

(५५)

कुल-कामिनि कमलायतलोचनि पहिरि ललित-पट—वासे
कर परनित कय सकुचलि चलली परिजनि पुर मन—आशे
भाय ससुर भैंसुर गुरुजन कर सङ्ग भय भोजन—पाने
हरषि ननदि कर—पल्लव गहिलेल रचि रचि बिलमि पयाने
ओर भोर परसल शशधरमुखि अधर—लसित—मृदुहासे
श्यामानन्द भान कवि—शेखर हेमपति क पद—दासे

भरफोरी

(५६)

नवयुवती बिच राजित रे, दुलहिनि नव-नेहे
कनकलता-वन-परिनत रे, जनु विजुली-रेहे
गुरुजनि मंगल गाओल रे, उपगत भरफोरी
दिअर छड़ी एक टोनल रे, रुसि रहली गोरी
बहुविध भेल सम्बोधन रे, हिय प्रेम प्रगाढ़े
पावि कनक-आभूषन रे, भेलि प्रनयिनि ठाढ़े
हेमपति-भगति-सरोवर रे, कय सुचिर सलाने
श्यामानन्द कवीश्वर रे, प्रमुदित-मन भाने

मसनहो

(५७)

कवि भरि चलली नहाय, पिअरमुख महुअरि हे
कर—अथा अकुलाय, भेलिछलि दूवरि हे
कर असलान भेली शुचि, हरष मनाओल हे
कर परसल अभिरुचि, अइहव पाओल हे
कर गोसाउनि पद-नति, पुनि पुनि हुलसित हे
श्यामानन्द हेमपति, भगति—विभूषित हे

चुमाओन

(५८)

अमुनमय शुभ—काल, कय फल धान रङ्गल नव—डाल
अइहव हरष क भेरि, अरिपन दय देखथि फेरि फेरि
दोष मनोहर वारि, मुरति चुमाओन कर पुर—नारि
मुदित नगर भरि भेल, दूवि अछत लय आशिष देल
श्यामानन्द सुजान, तात—हेमपति—पद—नतिमान

महेशबानी

(५९)

अभुवर हमर दयानिधि, छथि त्रिभुवन केर नाह
मुनि आशा बड़गोट भेल, दुखिया क होयत निवाह
नेह—वश भय अवश भोलानाथ लेता कोर या

● हाथ धय धैरज धरौता परिछि लोचन—नोर यो
 माय, वाप, परिजन केर, की रहिकरव परोस
 धय अयलहुँ गिरिजा-पति ! अपनेटा क भरोस
 जगतभरि हम देखि हारल शरन योग न आन यो
 द्रबहुँ आवहुँ हो दिगम्बर ! समय भेल अवसान यो
 सहि न सकव हम आओर, दुख जर्जर भेल देह
 चाकर हमरहु राखव, करव मसानि क नेह
 हेमपति-पद-भगत गाओल सुकवि श्यामानन्द यो
 वचन आरत सुनि उमापति देखि अति आनन्द यो

गंगा

(६०)

जयदेवसरी ! जयदेवसरी !! अमिय सलिल कलि कलुषहरी !!!
 मन कय राखल करव निमज्जन गतिविधि देखव नैनभरी
 दुख संकट अपनहि हटिजायत जखनहिं जायव तीरधरी
 गरव उमत भय ताहि भरोसहिं बलसं कुकरम कैलकरी
 धरम क पथ पहिनहि सं छारल भय नहि उपजल एकधरी
 बहुत दिवस पर अयलहुँ लगधरि परिछव भगवति ! नोनभरी
 पतित उधारिनि ! कोर कय राखव जहिविधि भव-निधि पारतरी
 श्यामानन्द हेमपति-सेवक पुनि पुनि सुरसरि पैरपरी

इति

दुर्गाप्रसाद खत्री द्वारा लहरी प्रेस, काशी में मुद्रित ।
